बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
नयी कविता

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी॰ के॰ कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)

नयी कविता :-

नयी कविता अनेक अर्थों में प्रयोगवाद का नया विकास मानी जा सकती है। उसने प्रयोगवाद की अनेक उपलब्धियों को आत्मसात किया है। इसी साम्य के कारण अनेक कवि प्रयोगवाद और नयी कविता दोनों के क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं और उनके विषय में यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि कहां तक वे प्रयोगवादी हैं और कहां तक नयी कविता के कवि। डॉ॰ जगदीश गुप्त ने स्पष्ट कहा है – "उसके प्रभूत प्रमाण दिये जा सकते हैं कि नयी कविता, प्रयोगवाद के विरोध में नहीं आयी वरन् उसको मुक्तभाव से आत्मसात करके इसी प्रसंग में उसका आविर्भाव हुआ।"

ऐतिहासिक दृष्टि से नयी कविता 'दूसरा सप्तक' (1951 ई.) के बाद की कविता को कहा जा सकता है। लक्ष्मीकांत वर्मा के अनुसार नयी कविता मूलतः 1953 ई. में 'नये पत्ते' के प्रकाशन के साथ विकसित हुई और जगदीश गुप्त तथा रामस्वरूप चतुर्वेदी के संपादन में प्रकाशित होनेवाले संकलन 'नयी कविता' (1954 ई.) में सर्वप्रथम अपने समस्त संभावित प्रतिमानों के साथ प्रकाश में आयी। इस काल की कविता का 'नयी कविता' नाम कई कारणों से पड़ा जिनमें से एक कारण यह है कि नयी कविता के कवि विषय – वस्तु और शिल्प की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती कवियों के साथ तो थे किन्तु वे स्वयं यह अनुभव कर रहे थे कि दूसरा सप्तक के कवियों द्वारा जहां और जिस सीमा तक समस्त काव्य-चेतना पहुंच चुकी थी, नयी कविता उससे आगे की ओर बढ़ चुकी है

और किन्हीं अर्थों में वह दूसरा सप्तक के कवियों की काव्य-चेतना से थोड़ी पृथक भी है।

1954 ई. में प्रयाग के 'साहित्य सहयोग' नामक सहकारी संस्थान ने नयी कविता का प्रकाशन किया। 'नये पत्ते' दो और तीन तथा 'आलोचना' के कुछ अंको से नयी कविता की मूल स्थापना को बल मिला। इस बात की चेष्टा की गयी कि इस नयी काव्यधारा को उन प्रतिमानों को लेकर विकसित किया जाए जो तत्कालीन भाव-बोध को वहन करते हुए सर्वथा नयी दृष्टि के साथ अवतरित हो रहे थे। नयी कविता का मूल स्त्रोत उस युग-सत्य और युग-यथार्थ में निहित है।

डॉ. जगदीश गुप्त ने नयी कविता के अंकों में नयी कविता पर विस्तार से विचार किया है। उन्होंने रसानुभूति के स्थान पर 'सह-अनुभूति' शब्द खोजा और अपना मत इस प्रकार प्रस्तुत किया, मेरा निश्चित मत है कि आज का साहित्य रसानुभूति के आधार पर नहीं सह-अनुभूति के आधार पर व्याख्यायित किया जा सकता है और इतना ही नहीं, सह-अनुभूति रसानुभूति के मूल में भी निहित है। उनके अनुसार रसानुभूति में जहाँ केवल भाव-विस्तार ही अभीष्ट रहता है वहां सह-अनुभूति के लिए भाव और दृष्टिकोण दोनों का विस्तार अपेक्षित है।"

नयी कविता के रूप-विधान से संबद्ध एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य को भी डॉ. जगदीश गुप्त ने रेखांकित किया है और वह है-अर्थ की लय। शब्द की लय का अभिप्राय कविता की इंद्रियबद्धता से है और

अर्थ की लय का अभिप्राय उनके अनुसार उस सही पाठ- विधि से है जो कविता के सूक्ष्म भावों तथा सांकेतिक अर्थों को उभारने में काफी सहायता होती है। वे लिखते हैं- "श्रेष्ठ कविता के लिए शब्दार्थ का संयुक्त रूप लयान्वित होना आवश्यक है किन्तु कविता को अर्थ-प्रधान मानने के बाद केवल अर्थ की लय के सहारे सर्जित, ऊपर से गद्य जैसी लगने वाली रचना को कविता के क्षेत्र से बहिष्कृत नहीं किया जा सकता।"

वस्तुतः नयी कविता हिन्दी काव्य का नवीनतम उन्मेष है और जीवित विधा के रूप में आज भी प्रवहमान है। नयी कविता के स्वरूप, उसमें निहित दृष्टिकोण और उसमें वर्णित संदर्भों को समझने के लिए वर्तमान - परिवेश का गहन परिज्ञान वांछनीय है। नूतनता के विविध आयामों को समेटे हुए नयी कविता की धारा प्रवाहित हो रही है। नयी कविता पर विचार करने के लिए पुरानी शास्त्रीय मान्यताएं उपयोगी नहीं रह गयी हैं। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मनोविज्ञान की विविध सरणियों का अध्ययन, अनुभूत सत्य के विभिन्न रूप दिग्भ्रम, संकटग्रस्त मनुष्य की मनःस्थिति, उलझे सामाजिक संदर्भ, संवेदनशीलता के आयाम, नकार, संत्रास और यंत्रणा के चित्र जीवन की विसंगतियां कला और सौंदर्य के प्रति नवीन दृष्टि आदि नयी कविता को समझने में मदद करेगी।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव
बक्सर (बिहार)